ख़ातून की इसमत दरी की गयी। याद रहे मेरी प्यारी बहनों कि यह चंद रोज़ा शोहरत नहीं टिकने वाली है, अलग अलग सोशियल नेटवर्क्स पर अपनी तसवीरें डालने से पहले ज़रा सोचो कि अगर तुमहारी तसवीर देखकर किसी के दिल में शहवत (Lust) पैदा हुई तो इसकी ज़िम्मादार तुम होगी और तुमहें भी इसका अज़ाब मिलेगा। याद रखना जिन के लिये तुम बन सवर कर तसवीरें डाल रही हो उनहें तुमहारी क़ब्र में नहीं आना है ! आना है तो बस मदीने वाले प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم ने आना है। उनको क्या जवाब दोगी कि जो ज़िंदगी तुमहें रसूले अरबी صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़े मिली तुम उसका क्या इसतमाल किया ?

जहाँ में हैं इबरत के कितने नमूने,मगर तुझको अंधा किया रंगो बू ने,
कभी ग़ौर से यह भी देखा है तू ने, जो आबाद थे वो महल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है, यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है।

यही वक़्त है

इसलाम की मुक़द्दस शहज़ादियों ! लिल्लाह ख़ुद पर यह ज़ुल्म न करो ! जहन्नम की आग सख़्त दहकती हुई है और ख़ुदा न करे अगर यही आमाल रहे तो तुमहें उसके अंदर जाना होगा ! वक़्त को बहुत ग़नीमत जानो और अपने रब की बारगाह में तौबा करलो । गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर अपने गुनाहों की माफ़ी मांग लो कि तुमहारा रब बहुत करीम है। अगर तुम सच्चे मन से तौबा करोगी तो वह बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला है । अपने रब के इस इरशाद को याद करो !

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ (الانفطار ٦)

तरजुमा : "ए आदमी तुझे किस चीज़ ने फ़रेब दिया अपने करम वाले रब से।"

यानी ए ग़ाफ़िल इंसान ! तेरा रब तो करीम है। उसी के करम के आग़ोश में तूने परवरिश पाई जब तू छोटा था और आज जब तू जवानी की मंज़िल में है तो तुझे किस चीज़ ने अपने रब की तरफ़ आने से रोक रखा है ? इस फ़रेबी दुनिया ने ? अरे यह तो चंद रोज़ा है ! आज है कल नहीं होगी । मगर आख़िरत तो हमेशा बाक़ी रहने वाली है। अगर अज़ाब है तो वह भी दाइमी और सवाब है तो वह भी दाइमी !

लिहाज़ा हर मोमिन बहन अपनी इसलाह की कोशिश करे और आस पास की तमाम ख़वातीन की इसलाह की कोशिश करें।وباللہ توفیق

An Najm Islamic Media

क़ुरआन, हदीस व फ़िक़ाह के मसाइल को आम करने और आम मुसलमानों को अपने दीन से आशना कराने की एक कोशिश का नाम है **अन नज्म इसलामिक मीडीया**, जो कि यू-ट्यूब के ज़रीये पैग़ामे इसलाम को आम कर रही है।

हम **मसलके आला हज़रत** के पक्के मानने वाले हैं और इसी तरह के लिटरेचर को फ़रोग़ देते हैं।

इस चैनल को **सब्सक्राइब** करके आप सुन सकेंगे इसलाही बयानात, फ़िक़ही मसाइल, दर्से क़ुरआन, दर्से हदीस, दर्से फ़िक़ाह, सवाल-जवाब सेशन में दीनी सवालों के जवाब, महफ़िले नज्म में हमद नातो मंक़बत, तिलावते क़ुरआन, अकाबरीने अहले सुन्नत के मुबारक बयानात, नामूसे रिसालत व इश्क़े रसूल पर ख़ुसूसी बयानात। तो फ़ौरी तौर पर इसे **सब्सक्राइब** करें।

हज़राते गिरामी ! इसी तरह की और भी बहुत सी दीनी कताबें, फ़ोलडर, रसाइल, पैंफ़लेट वग़ैरह हमारी तरफ़ से छापे जाते हैं और मुफ़्त में तक़सीम किये जाते हैं । अगर आप भी इनमें ताबुन या इशतिहार देना चाहते हैं तो दर्ज ज़ेल न० पर राबता करें

जनाब फ़रदीन अहमद ख़ाँ रज़वी 9837777689
जनाब अमान उद्दीन ख़ाँ रज़वी 8527632019
जनाब साबिर हसन ख़ाँ रज़वी 8218824901

अल्लाह हम सब से अपने दीन का काम लेले प्यारे महबूब صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़े।
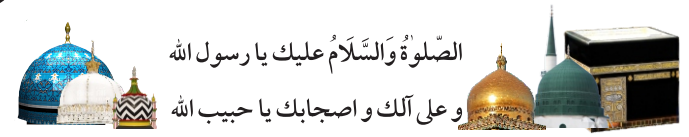
نصیحة الواعظین للمعاشرة الخواتین

अंदर पढ़ें...

- इसलामी ख़वातीन के लिये मुफ़ीद नसीहतें
- ख़वातीन की मुआशरे में अहमियत
- मुक़द्दस शहज़ादियों के लिये क़ुरआनी हिदायात

पेशकश

अहले सुन्नत व जमाअत

शायकर्दा

अन नज्म इस्लामिक मीडीया

8527632019,9837777689

औरत की मुआशरे में अहमियत

الحمد لله رب العالمين و الصلاة و السلام على سيد المرسلين و آله و صحبه أجمعين إلى يوم الدين

बाद हम्दो सना व सलात व सलाम अर्ज़ यह कि अल्लाह ने इंसान का जोड़ा बनाया है । जितनी अहमियत का हामिल मर्द है उतनी ही औरत है , कि उन में से एक की भी ग़ैर मौजूदगी में कभी भी किसी कामयाब मुआशरे की तश्कील नहीं हो सकती। ताहम जैसे मर्द पर अहकामे इस्लाम जारी हैं वैसे ही औरत पर भी क़वानीने इस्लाम की पासदारी फ़र्ज़ है। लिहाज़ा एक कामयाब इसलामी माहौल वुजूद में लाने के लिये औरत के मक़ाम को समझना बेहद ज़रूरी है , वह कभी तो बेटी की **शक्ल** में अपने ख़ानदान की आबरू बन कर पैदा होती है , कभी एक बहन बन कर अपने भाई के दिल का क़रार बनती है, कभी अपने शौहर का ईमान मुकम्मल करती और उसकी आंखों का नूर बनती है , और कभी माँ बनती है तो जन्नत उसके क़दमों में आ जाती है। सिर्फ़ यही नहीं वह अपनी बहन की राज़दार , माँ की मददगार और बाप की ख़िदमत गुज़ार भी होती है। हासिले कलाम यह कि औरत के वुजूद की इंसानी जिंदगी में अहमियत "अज़हर मिनश शम्स" यानी सूरज से ज़्यादा रौशन है। और एक औरत की इस्लाह एक मुआशरे की इस्लाह के बराबर है, इसी जज़्बे के तहत यह तहरीर आप नाज़रीन के सुपुर्द है और आप सब से इल्तिमास है के सब ख़वातीने अहले सुन्नत के लिये दुआ करें कि अल्लाह सबकी इस्लाह फ़रमाये।

آمین ثم آمین یارب العالمین بجاہ النبی الامین علیہ صلاۃ و التسلیم

मग़रिबी तहज़ीब के निशाने पर कौन ?

इसलाम की मुक़द्दस शहज़ादियों ! क्या आप जानती हैं कि आलम में क्या क़यामत बरपा है ? चारों तरफ़ नज़र करें तो बस फ़हाशी फ़हाशी, उरयानियत उरयानियत नज़र आती है, जहाँ निगाह जाती है बेपर्दगी का अंधेरा आंखों का नूर ख़त्म करता मालूम होता है। और यह सब क्यूँ ? इसकी अस्ल वजह यह है कि एक लड़की का दिल बहुत नाज़ुक होता है और वह अकसर अपने दिल की सुनती है, तो अग़यार उसे अपने दामे फ़रेब में आसानी से ले लिया करता है। आज फ़ैशन व मग़रिबी तहज़ीब के नाम पर आपसे आपकी पाक दामनी छीनी जा रही है, दुश्मन ने आपके क़ल्बे नाज़ुक को निशाना बना कर अपना बेग़ैरती का ज़हर आलूदा तीर आप

पर छोड़ दिया है अब यह आप पर है कि इस से ख़ुद को ज़हर आलूद करलें, या इसके आगे क़ौमे मुस्लिम की अलमबरदार बन कर ,सीना ब सिपर होकर खड़ी हो जायें और यह कह दें

मुझे हरगिज़ किसी फ़ैशन की ज़रूरत ही नहीं,

मैं कनीज़े ज़हरा हूँ मुझे हाजत ही नहीं,

औरत के लिये क़ुरआनी हिदायात

हमारे रब तआला का हम पर किता बड़ा अहसान है कि हमें हर मुश्किल का हल और हर परेशानी से निजात दिलाने वाली किताब अपने प्यारे हबीब صلی اللہ علیہ وسلم के ज़रिये भेजी ,अगर हम जानना चाहते हैं कि हम क्यों पैदा हुए ? तो इसका जवाब भी क़ुरआन में है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (الذاريات ٥٦)

तरजुमा: "और मैं ने जिन्न और इंसान इसी लिये बनाये कि मेरी बंदगी करें।"

फिर ख़वातीन के लिये फ़रमाया :

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُوْلٰى

तरजुमा : "और अपने घरों में ठहरी रहो,और बेपर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बेपर्दगी ।"(अल-अहज़ाब 33)

और एक मकाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ (النور ٣١)

तरजुमा : "और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें, और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं, मगर जितना ख़ुद ही ज़ाहिर है, और वह दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें, और अपना सिंघार ज़ाहिर न करें।"

अल्लाह अल्लाह ! मेरा इसतिमाल है उन मुक़द्दस ख़वातीन से कि इन आयात को बार बार ग़ौर से पढ़ें और अपना मुहासबा करें अपने अंदर झाकें और दिल से पूछें क्या मैं ने क़ुरआन के इन फ़रामीन की पासदारी की ? या उन को फ़रामोश कर

दिया ? रोज़े महशर जब मेरा रब्बुल इज़्ज़त मुझ से पूछेगा तो मेरा जवाब क्या होगा ? लिल्लाह ! मेरी बहनों अल्लाह की बारगाह में तौबा करलो ,ताइब हो जाओ ! वरना न जाने कब तुम्हारे बदन पर यह बहतरीन इत्र की ख़ुशबू ,काफ़ूर की ग़मग़ीन बू में बदल जाये ! कब तुम मोहतरमा से मरहूमा बन जाओ इसका कोई पता नहीं है।

कहीं बग़ैर तौबा किये रुख़सत हुई तो आगे की राह बहुत पुर ख़ार है। तुम्हारा यह नाज़ुक वुजूद कैसे उस आग को झेल सकेगा जिस को बड़े बड़े सूरमा नहीं झेल पाएंगे !

इश्क़े मजाज़ी और तबाही !

दौरे हाज़िर में जो फ़ितने हमारे रूबरू हैं उन में से ख़वातीन के लिये सब से मुज़िर है यह इश्क़े मजाज़ी का भूत, जो एक बार किसी आसेब की तरह सवार हो जाये तो उतरने का नाम नहीं लेता। बारहा देखा गया है कि भोली भाली लड़कियाँ कुछ फ़रेबी लोगों की चिकनी चुपड़ी बातों में आकर अपनी और अपने ख़ानदान की आबरू को दाँव पर लगा देतीं हैं और कई बार तो नऊज़ बिल्लाह अपना गौहरे इसमत भी खो देती हैं।याद रखो मेरी प्यारी बहन यह ज़िंदगी चंद रोज़ा है और फिर वही क़ब्र की अंधेरी रात है जिस में सिर्फ़ तुम और तुम्हारे आमाल होंगे। जब सरकार सरवरे आलम صلی اللہ علیہ وسلم

तशरीफ़ लाएंगे तो उनहें क्या मूँह दिखाओ गी ? रोज़े क़यामत जब पूछा जाएगा कि जवानी कहाँ बिताई तो क्या जवाब दोगी ? पारकों में ? चौराहों पर ? बाज़ारों में ग़ैर मर्दों के साथ? हरगिज़ नहीं, आज ही अपनी ज़िंदगी को मुस्तफ़ा करीम صلی اللہ علیہ وسلم के नाम वक़्फ़ करदो और बस हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ وسلم की रज़ा जोई में लग जाओ, इश्क़ करो तो मदीने वाले प्यारे प्यारे हसीनो महजबीन हर टूटे दिल के सहारे मदनी मुसतफ़ा صلی اللہ علیہ وسلم से करो, जिनका इश्क़ अस्ले ईमान जाने ईमान है ।

सोशियल मीडीया मुफ़ीद या मुज़िर

आज के दौर में जो ज़राय इबलाग़ (Modes of Communication) पाये जाते हैं उन में से सबसे ज़्यादा मक़बूलियत सोशियल मीडीया को हासिल है। और इसके ज़रीये बहुत से लोग फ़ायदा भी उठाते हैं, मगर जो आज सोशियल मीडीया पर फ़हाशी का दौर दौराँ है वह किसी से ढका छुपा नहीं है। लिहाज़ा आये दिन ख़बरें मिलती रहतीं हैं फ़लाँ शहर में सोशियल मीडीया के ज़रीये बहला कर कसी